आरती – जगदीशजी की

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे ।। ॐ जय जगदीश ....
जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का ।
सुख–सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ।। ॐ जय जगदीश ....
माता–पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी ।। ॐ जय जगदीश ....
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ।। ॐ जय जगदीश ....
तुम करूणा के सागर, तुम पालन कर्ता ।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ।। ॐ जय जगदीश ....
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राणपति ।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति ।। ॐ जय जगदीश ....
दीनबन्धु दुःखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे ।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ।। ॐ जय जगदीश ....
विषय–विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धाभक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ।। ॐ जय जगदीश ....
तन, मन, धन सब अर्पण, स्वामी सब कुछ है तेरा ।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ।। ॐ जय जगदीश ....
श्री जगदीश जी की आरती जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावे ।। ॐ जय जगदीश ....